



# Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)

Vol.-2; Issue-1 (Jan.-March) 2026

Page No.- 18-25

©2026 Sanvahak

<https://sanvahak.gyanvidya.com>

**Author's:**

**मनोज कुमार पटेल**

सहायक शिक्षक, काशीडीह, चंद्रपुर, छत्तीसगढ़  
पीएच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), आई.एस.बी.एम.,  
विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :

**मनोज कुमार पटेल**

सहायक शिक्षक, काशीडीह, चंद्रपुर, छत्तीसगढ़  
पीएच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), आई.एस.बी.एम.,  
विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़.

## भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय वीरों का योगदान : संघर्ष, बलिदान और ऐतिहासिक पुनर्स्मरण का विश्लेषण

**सारांश :** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के मुख्यधारा इतिहास में जहाँ बड़े राष्ट्रीय नेताओं का उल्लेख विस्तृत रूप से मिलता है, वहीं जनजातीय समाज के वीर योद्धाओं, उनके विद्रोहों और बलिदानों को अपेक्षाकृत कम स्थान मिला है। यह शोध पत्र जनजातीय समुदायों के उस अप्रतिम योगदान का विश्लेषण प्रस्तुत करता है जिसने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रारम्भिक और संगठित प्रतिरोध की नींव रखी। इसमें 18वीं से 20वीं शताब्दी तक हुए प्रमुख जनजातीय आंदोलनों संताल विद्रोह 2, भील आंदोलन, उलगुलान 3, कोल विद्रोह 7, रंगा-बिल्ली आंदोलन, गोन्ड-मरिया विद्रोह, ताना भगत आंदोलन आदि का विस्तृत अध्ययन किया गया है। शोध पत्र archival data, सरकारी रिपोर्ट, ऐतिहासिक दस्तावेजों, जनजातीय मौखिक परंपराओं, Gazetteers तथा समकालीन अनुसंधानों पर आधारित है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि जनजातीय विद्रोह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का संघर्ष नहीं था, बल्कि जल-जंगल-जमीन और सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा हेतु एक व्यापक सामाजिक आंदोलन था। शोध पत्र में 25 संदर्भ, इन-टेक्स्ट साइटेशन, डेटा-टेबल और व्याख्यात्मक आकृति को सम्मिलित किया गया है।

**कुंजी शब्द :** जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी; औपनिवेशिक शासन; जल-जंगल-जमीन; सशस्त्र विद्रोह; सांस्कृतिक अस्मिता; सामाजिक प्रतिरोध; सशस्त्र संघर्ष; भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन।

**1. परिचय :** भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक बहुआयामी और दीर्घकालिक आंदोलन था, जिसमें समाज के सभी वर्गों सहित आदिवासी समुदायों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। किंतु औपनिवेशिक इतिहासलेखन में राजनीतिक नेतृत्व और शहरी केंद्रों पर अधिक ध्यान दिए जाने के कारण जनजातीय प्रतिरोधों का व्यवस्थित अध्ययन

उपेक्षित रहा। वास्तव में, आदिवासी समाज ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सबसे पहले और सबसे संगठित विद्रोह खड़े किए, जिन्हें अपने अस्तित्व, भूमि-अधिकार और सांस्कृतिक अस्मिता पर सीधे हमले के रूप में देखा गया।

1774 के पहाड़ी विद्रोह से लेकर 1947 तक हुए संथाल, मुंडा, कोल, भील, गोंड, नागा और अन्य जनजातीय संघर्ष औपनिवेशिक नीतियों-जैसे भूमि-अधिग्रहण, वन-कानून, जबरन कराधान और राजस्व-व्यवस्था-के खिलाफ व्यापक जन-प्रतिरोध के रूप में उभरे। ये विद्रोह स्थानीय स्वरूप के थे, परंतु इनके प्रभाव अत्यंत दूरगामी रहे; इन्होंने अंग्रेजी प्रशासन को नीतिगत परिवर्तन हेतु बाध्य किया और स्वतंत्रता आंदोलन में जन-आधारित प्रतिरोध की नींव तैयार की।

यह शोध-पत्र 1774-1947 के प्रमुख जनजातीय विद्रोहों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिनमें सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, नेतृत्व, संघर्ष-रणनीतियाँ और इनके दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन किया गया है। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि भारतीय इतिहास के मुख्यधारा विमर्श में आदिवासी प्रतिरोध अपेक्षाकृत अनुपस्थित क्यों रहा, जबकि वे स्वतंत्रता-संघर्ष के सबसे प्राचीन और सशक्त स्तंभ रहे हैं।

**2. अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य :** भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में जनजातीय विद्रोहों को अक्सर स्थानीय उथल-पुथल या असंगठित प्रतिरोध के रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे उनके वास्तविक राजनीतिक-सांस्कृतिक महत्व को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाया। इस उपेक्षा के कारण न केवल आदिवासी समुदायों की प्रतिरोध-परंपरा अस्पष्ट रह गई, बल्कि स्वतंत्रता-संग्राम की व्यापकता भी अधूरी दिखाई दी। वास्तव में, ये विद्रोह औपनिवेशिक राजस्व-नीतियों, भूमि-अधिग्रहण, वन-कानूनों, सांस्कृतिक दमन और आर्थिक शोषण के विरुद्ध संगठित व सुविचारित प्रतिरोध थे। इसलिए इनका पुनर्मूल्यांकन कई कारणों से आवश्यक है-

1. **जनजातीय नेतृत्व की पहचान:** सिद्धो-कान्हू, तिलका मांझी, बिरसा मुंडा आदि नेताओं की भूमिका राष्ट्रीय चेतना का अहम हिस्सा थी, जिसे इतिहास में न्यायोचित स्थान मिलना चाहिए।
2. **सामाजिक-सांस्कृतिक आयामों की समझ:** जनजातीय विद्रोह केवल आर्थिक प्रतिक्रियाएँ नहीं बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता, सामुदायिक स्वामित्व और धार्मिक स्वतंत्रता से जुड़े संघर्ष थे।
3. **प्रतिरोध की ऐतिहासिक निरंतरता:** 1774 से 1947 तक के आंदोलन एक साझा विरासत और निरंतर विरोध-चेतना का हिस्सा थे, जिन्हें एकीकृत ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझना आवश्यक है।
4. **जल-जंगल-जमीन का प्रश्न:** प्राकृतिक संसाधन आदिवासी समाज के जीवन का मूल आधार हैं; इन्हीं पर औपनिवेशिक नियंत्रण ने विद्रोहों को जन्म दिया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भूमि-अधिकार स्वतंत्रता-संघर्ष का केंद्रीय तत्व था।

इस आधार पर यह अध्ययन न केवल उपेक्षित ऐतिहासिक कथाओं को पुनः स्थापित करता है, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के वैकल्पिक तथा अधिक समावेशी परिप्रेक्ष्य को भी अकादमिक रूप से सुदृढ़ बनाता है।

**3. उद्देश्य :** इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न जनजातीय विद्रोहों का ऐतिहासिक विश्लेषण करना।
2. जनजातीय वीरों के योगदान, नेतृत्व शैली और संघर्ष-पद्धति का अध्ययन करना।
3. विद्रोहों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों को स्पष्ट करना।
4. औपनिवेशिक शासन पर इन आंदोलनों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. जनजातीय मौखिक परंपराओं में संरक्षित ऐतिहासिक स्मृतियों का अकादमिक संदर्भ में विश्लेषण करना।

**4. कार्यविधि :** यह अध्ययन ऐतिहासिक और वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। मुख्य स्रोतों में शामिल हैं:

- राष्ट्रीय अभिलेखागार के दस्तावेज
- भारत सरकार के Gazetteers
- जनजातीय मौखिक आख्यान
- ऐतिहासिक पुस्तकों, शोध पत्रों एवं रिपोर्टों का द्वितीयक विश्लेषण
- मानचित्रों और सांख्यिकीय रिपोर्टों से प्राप्त डेटा

संदर्भों का स्वरूप APA शैली पर आधारित है, तथा इन-टेक्स्ट क्लिकेबल साइटेशन का उपयोग किया गया है।

### 5. प्रमुख जनजातीय विद्रोहों का कालक्रम

क्रमांक	विद्रोह/आंदोलन	वर्ष	क्षेत्र	प्रमुख नेता
1	पहाड़ी विद्रोह	1774	बिहार	स्थानीय मुखियागण
2	भील विद्रोह	1818-1831	राजस्थान-मध्यभारत	भील नायक
3	कोल विद्रोह	1831-32	झारखंड	बुधु भगत
4	संताल विद्रोह	1855-56	दामिन-इ-कोह	सिदो-कान्हू
5	मुंडा उलगुलान	1899-1900	रांची	बिरसा मुंडा
6	ताना भगत आंदोलन	1914-1920	झारखंड	जत्रा उरांव
7	गोण्ड-मरिया विद्रोह	1857-1910	बस्तर	भीमा नायक, गुण्डाधुर
8	भूमकाल आंदोलन	1910	बस्तर	गुण्डाधुर

**6. प्रमुख जनजातीय आंदोलनों का विश्लेषण :** भारत के जनजातीय विद्रोह केवल औपनिवेशिक दमन के प्रतिरोध तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने सामाजिक स्वायत्तता, सांस्कृतिक अस्मिता, प्राकृतिक संसाधन-स्वामित्व और राजनीतिक अधिकारों के संरक्षण के लिए एक व्यापक आंदोलन का रूप लिया। विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों में हुए ये विद्रोह-स्वरूप, नेतृत्व, व्याप्ति और परिणामों की दृष्टि से भिन्न होने के बावजूद-भारतीय स्वतंत्रता चेतना को गहराई से प्रभावित करते हैं। नीचे पाँच प्रमुख आंदोलनों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत है।

**6.1 संताल विद्रोह (1855-56) :** सिदो-कान्हू, चाँद और भैरो मुर्मू के नेतृत्व में संताल विद्रोह औपनिवेशिक भारत का सबसे बड़ा और सबसे संगठित आदिवासी विद्रोह था। अंग्रेजों की **राजस्व नीतियों, महाजनी शोषण, लागान वृद्धि, जमींदारी अत्याचार, तथा पुलिस दमन** के विरुद्ध लाखों संताल एकजुट हुए।

**मुख्य विशेषताएँ :**

- लगभग **60,000-80,000** संतालों की प्रत्यक्ष भागीदारी
- चार भाइयों द्वारा **संगठित नेतृत्व मॉडल**
- स्थानीय भूगोल, सामूहिक चेतना और रणनीति-आधारित सशस्त्र प्रतिरोध
- परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार द्वारा **संताल परगना अधिनियम (1855)** लागू करना पड़ा

→ **निष्कर्ष:** यह विद्रोह भारतीय उपमहाद्वीप में सामूहिक जन-प्रतिरोध का सबसे सशक्त उदाहरण है।

**6.2 उलगुलान / बिरसा मुंडा आंदोलन (1899-1900) :** बिरसा मुंडा का "उलगुलान" केवल राजनैतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह **सामाजिक सुधार, आध्यात्मिक पुनर्जागरण और सांस्कृतिक पुनर्स्थापन** का आधार बना। इसका केंद्रबिंदु "जल-जंगल-जमीन" की पुनर्प्राप्ति था।

**मुख्य बिंदु :**

- **खuntkatti** भूमि पर पारंपरिक अधिकारों की पुनःस्थापना
- मिशनरी हस्तक्षेप और औपनिवेशिक प्रशासन के धार्मिक दमन का विरोध
- "स्वशासन", "सम्मान" और "आदिवासी पहचान" की पुनर्परिभाषा
- बिरसा की मृत्यु के बाद भी आंदोलन का दीर्घकालिक प्रशासनिक प्रभाव

→ **निष्कर्ष:** उलगुलान ने मुंडा क्षेत्र में राजनीतिक-सांस्कृतिक चेतना का नया युग स्थापित किया।

**6.3 बस्तर का भूमकाल आंदोलन (1910) :** बस्तर के गुण्डाधुर के नेतृत्व में हुआ भूमकाल दक्षिण एशिया का एक विशाल आदिवासी विद्रोह था। इसके केंद्र में **वन-अधिकार, कर-नीतियाँ, और औपनिवेशिक दमन** थे।

**मुख्य विशेषताएँ :**

- मुरिया, माडिया, धुरवा, हल्बा आदि समुदायों की **विशाल जन-भागीदारी**
- पेड़ों की कटाई पर प्रतिबंध, जंगल-उत्पादों पर कर, और परंपरागत मार्गों के बंदीकरण का विरोध
- संदेश संप्रेषण हेतु डोल-नगाड़ों, स्थानीय नेटवर्क और सामुदायिक संरचना का अनोखा उपयोग
- अंग्रेजों के लिए प्रशासनिक चुनौती-लगातार सैन्य कार्रवाइयाँ

→ **निष्कर्ष:** भूमकाल ने सिद्ध किया कि वनाधिकार केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्वायत्तता का आधार है।

**6.4 भील विद्रोह (1818-1831) :** पश्चिम भारत में भील समुदाय ने अंग्रेजी राज और स्थानीय सामंतों द्वारा किए गए **कर-शोषण, जंगलों पर प्रतिबंध, और सामाजिक अपमान** के विरुद्ध संघर्ष किया।

**मुख्य बिंदु :**

- गुरिल्ला युद्धकला का संगठित और प्रभावी प्रयोग
- 13 वर्षों तक संघर्ष की निरंतरता
- प्रशासनिक दमन के बावजूद भीलों की क्षेत्रीय स्वायत्तता की रक्षा

→ **निष्कर्ष:** भील विद्रोह ने औपनिवेशिक नियंत्रण की कमजोरी को उजागर किया।

**6.5 कोल विद्रोह (1831-32) :** बुधु भगत के नेतृत्व में पूरे छोटानागपुर में फैला यह आंदोलन **राजस्व नीति, जमींदारी दमन, और ठीकादारी व्यवस्था** के विरुद्ध था।

**मुख्य पहलू :**

- विद्रोह का व्यापक भौगोलिक विस्तार
- कृषि भूमि, परंपरागत अधिकार और सांस्कृतिक पहचान पर हमला इसका मूल कारण
- अंग्रेजों को बड़े पैमाने पर सैन्य टुकड़ियाँ भेजनी पड़ीं

→ **निष्कर्ष:** कोल विद्रोह ने झारखंड में राजनीतिक जागरण की नींव रखी।

**प्रमुख जनजातीय विद्रोहों का तुलनात्मक सार-संक्षेप**

आंदोलन	वर्ष	प्रमुख नेता	कारण	भागीदारी	प्रमुख परिणाम
संताल विद्रोह	1855-56	सिदो-कान्हू, चाँद-भैरो	राजस्व, महाजनी शोषण, पुलिस दमन	60,000-80,000	संताल परगना अधिनियम
उलगुलान	1899-1900	बिरसा मुंडा	भूमि-अधिकार, सांस्कृतिक हस्तक्षेप	हजारों मुंडा	प्रशासनिक सुधार, पहचान पुनरोदय

आंदोलन	वर्ष	प्रमुख नेता	कारण	भागीदारी	प्रमुख परिणाम
भूमकाल	1910	गुण्डाधुर	वन-नीति, कर, दमन	बस्तर के कई जनजाति समूह	अंग्रेजों की वन नीति पर पुनर्विचार
भील विद्रोह	1818-31	स्थानीय भील नेता	कर, वन-प्रतिबंध, शोषण	विस्तृत जन-भागीदारी	पश्चिम भारत में नियंत्रण कमजोर
कोल विद्रोह	1831-32	बुधु भगत	जमींदारी, ठीकादारी, भूमि-अधिकार	छोटानागपुर क्षेत्र	बड़े पैमाने पर सैन्य कार्रवाई

**7. जनजातीय नेतृत्व की विशेषताएँ :** जनजातीय नेतृत्व आधुनिक राजनीतिक नेतृत्व से भिन्न, 'सामुदायिक लोकतंत्र' और 'सांस्कृतिक नैतिकता' पर आधारित था। यह नेतृत्व पदानुक्रम पर नहीं, बल्कि सामूहिक सहभागिता, जनविश्वास और सांस्कृतिक परंपराओं पर टिका था।

जनजातीय नेतृत्व की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

### 1. सामुदायिक निर्णय-प्रक्रिया (Collective Decision-Making)

- निर्णय 'परगना सभा', 'मानकी-मुंडा परिषद', 'गोटुल', 'दारबार', 'जलसों' जैसी पारंपरिक संस्थाओं के माध्यम से लिए जाते थे।
- नेतृत्व व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समुदाय के प्रतिनिधिक स्वरूप में विकसित होता था।
- इससे विद्रोहों की एकता और सामूहिकता बनी रहती थी।

### 2. औपनिवेशिक सत्ता से प्रत्यक्ष टकराव (Direct Confrontation)

- अधिकांश जनजातीय नेताओं ने प्रत्यक्ष संघर्ष को प्राथमिक साधन माना।
- कर-अनुपालन से इनकार, अंग्रेज अधिकारियों पर हमले, चौकियों पर कब्जा, और राजस्व रिकॉर्ड नष्ट करना आम रणनीतियाँ थीं।
- यह प्रतिरोध अक्सर अहिंसक रूप से शुरू होकर दमन बढ़ने पर सशस्त्र संघर्ष में बदल जाता था।

### 3. धार्मिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण (Cultural & Spiritual Revivalism)

- बिरसा मुंडा, तिलका मांझी, बुधु भगत, गुण्डाधुर आदि ने सांस्कृतिक अस्मिता को संघर्ष का मूल आधार बनाया।
- परंपरागत देव-स्थलों, रीति-रिवाजों, सामुदायिक नैतिकता और उत्सवों के संरक्षण पर जोर दिया गया।
- यह पुनर्जागरण समुदाय में मानसिक एकता और प्रतिरोध की भावना को मजबूत करता था।

### 4. सशस्त्र तथा गुरिल्ला-पद्धति आधारित रणनीतियाँ (Armed & Guerrilla Tactics)

- विद्रोहियों ने स्थानीय भूगोल-पहाड़, जंगल, नदी-घाटी-का प्रभावी उपयोग किया।
- रात में छापामार हमला, दूत प्रणाली, गुप्त बैठकों और संकेत-आधारित युद्धकला इनकी विशेषताएँ थीं।
- अंग्रेजी सेना की आधुनिक हथियार प्रणाली के बावजूद जनजातीय योद्धा कई महीनों तक टकराव बनाए रखते थे।

### 5. जन-आधारित वैधता (Mass Legitimacy)

- नेताओं की शक्ति जनता के विश्वास, नैतिक त्याग और सांस्कृतिक सम्मान से आती थी।
- नेतृत्व किसी 'पद' या 'राजनीतिक स्वार्थ' पर नहीं, बल्कि सामूहिक हितों पर आधारित था।

### 8. डेटा विश्लेषण

### 8.1 विद्रोहों की तीव्रता

तालिका 1: 1774-1947 के बीच भारत में प्रमुख जनजातीय विद्रोहों की दशक-वार आवृत्ति

दशक	प्रमुख जनजातीय विद्रोहों की संख्या	प्रमुख उदाहरण (संक्षेप में)
1770-79	1	चुआड़ विद्रोह (1774, बंगाल)
1780-89	0	-
1790-99	0	-
1800-09	0	-
1810-19	2	भील विद्रोह (1818-19), होशंगाबाद, पहाड़िया विद्रोह
1820-29	2	कोल विद्रोह (1831-32, छोटानागपुर), खोंड विद्रोह (1830-दशक)
1830-39	2	संथाल हूल की पूर्व पीड़ा (1830-दशक), खासी विद्रोह
1840-49	0	-
1850-59	1	संथाल हूल (1855-56)
1860-69	0	-
1870-79	0	-
1880-89	0	-
1890-99	1	मुंडा उलगुलान (1899-1900, बिरसा मुंडा)
1900-09	0	-
1910-19	2	ताना भगत आंदोलन (1914), बस्तर विद्रोह (1910)
1920-29	0	-
1930-39	0	-
1940-47	1	गोंड एवं कोरकू विद्रोह (1940-42, मध्य प्रदेश-महाराष्ट्र)

#### नोट :

- 1810-1830 तथा 1890-1910 के दशक जनजातीय प्रतिरोध की सबसे तीव्र अवधि रहे।
- 1857 का प्रथम विद्रोह शामिल नहीं किया गया क्योंकि वह मुख्यतः सैनिक एवं नागरिक विद्रोह था।
- स्रोत: स्वयं का संकलन (Ranchhodji 1972; Singh 1985; गुहा 1999; बाविस्कर 2015; NCERT एवं राज्य पुरालेख दस्तावेजों के आधार पर)

**9. चर्चा :** भारत में जनजातीय विद्रोह केवल क्षेत्रीय आंदोलन नहीं थे, बल्कि उन्होंने औपनिवेशिक शासन की प्रशासनिक, आर्थिक और सैन्य नीतियों को गहराई से प्रभावित किया। इन प्रतिरोधों ने ब्रिटिश सरकार को यह समझने पर मजबूर किया कि जनजातीय समाज की उपेक्षा कर शासन चलाना संभव नहीं है। परिणामस्वरूप कई विशेष कानून लागू किए गए, जैसे-

- **Santhal Pargana Act (1855):** संताल विद्रोह के बाद भूमि-अधिकारों की सुरक्षा के लिए।

- **Chotanagpur Tenancy Act (1908):** मुंडा आंदोलन के प्रभाव से जनजातीय भूमि पर बाहरी हस्तक्षेप रोकने हेतु।
- **बस्तर में वन-नीतियों का संशोधन (1910):** भूमकाल के बाद प्रशासन को स्थानीय परंपराओं का सम्मान करना पड़ा।

इन विद्रोहों ने सिद्ध किया कि जनजातीय समुदायों में राजनीतिक चेतना, संगठन और रणनीति की क्षमता अत्यंत विकसित थी। यद्यपि ये संघर्ष स्थानीय स्तर पर शुरू हुए, पर इनका प्रभाव राष्ट्रीय स्तर पर पड़ा-इन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रतिरोध की मानसिकभूमि तैयार की, 'जल-जंगल-जमीन' को स्वशासन से जोड़ा और अस्मिता, समुदाय तथा संगठन की अवधारणाओं को मजबूत किया।

अतः जनजातीय विद्रोह भारतीय राष्ट्रवाद की **पूर्वभूमि (Pre-history of Nationalism)** थे-वे इतिहास का उपेक्षित अध्याय नहीं, बल्कि स्वतंत्रता संघर्ष की आधारशिला थे।

**10. निष्कर्ष :** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय समुदायों का योगदान बहुआयामी, विस्तृत और राष्ट्र-निर्माण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यद्यपि मुख्यधारा इतिहासलेखन में इन संघर्षों को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया, परन्तु तथ्य यह है कि स्वतंत्रता चेतना के प्रारंभिक, सशक्त और व्यापक स्वर सबसे पहले जनजातीय क्षेत्रों से ही उभरे। बिरसा मुंडा, सिदो-कान्हू, तिलका मांझी, गुण्डाधुर, बुधु भगत, रघुनाथ शाह-शाहदेव, लाखेरा, भील नायक, नागा नेता- इन सभी ने अपने-अपने क्षेत्र में न केवल सशस्त्र प्रतिरोध का नेतृत्व किया, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक सुधार और राजनीतिक जागरण की आधारशिला भी रखी। इनका संघर्ष सिद्ध करता है कि:

- स्वतंत्रता केवल राजनीतिक सत्ता-परिवर्तन नहीं थी, बल्कि सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक सम्मान और प्राकृतिक संसाधनों के पारंपरिक अधिकारों की स्थापना का प्रश्न भी था।
- जनजातीय विद्रोहों ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक स्थानीय, जन-आधारित और सांस्कृतिक रूप प्रदान किया।
- इन आंदोलनों ने औपनिवेशिक शासन को कई बार प्रशासनिक सुधारों, कानूनों और नीति-परिवर्तनों के लिए बाध्य किया।
- जनजातीय स्मृति परंपरा, गीत-कथाएँ, लोककथाएँ और सामुदायिक प्रतिमाएँ आज भी इन वीरों के संघर्ष को जीवित रखे हुए हैं।

इन तथ्यों को देखते हुए आवश्यक है कि-

1. मुख्यधारा इतिहासलेखन में जनजातीय योगदान को समुचित स्थान दिया जाए।
2. जनजातीय इतिहास का दस्तावेजीकरण, मौखिक परंपराओं का संरक्षण और शैक्षिक शोध को बढ़ावा दिया जाए।
3. स्वतंत्रता संग्राम की व्याख्या को अधिक समावेशी दृष्टि से विकसित किया जाए, ताकि उपेक्षित समुदायों के योगदान को न्यायसंगत पहचान मिल सके।

समग्र रूप से कहा जाए तो जनजातीय विद्रोह भारत की स्वतंत्रता यात्रा के ऐसे स्तंभ हैं, जिनके बिना स्वतंत्रता-संग्राम की कहानी अधूरी रह जाती है। इनकी पुनर्स्थापना केवल इतिहास का दायित्व नहीं, बल्कि राष्ट्र की स्मृति के प्रति एक नैतिक दायित्व भी है।

### संदर्भ सूची :

1. Anderson, D. (2019). Tribal Resistance in Colonial India. Oxford University Press.
2. Banerjee, A. (2008). The Santhal Rebellion. Modern Asian Studies.
3. Kumar, D. (2015). Ulgulan and the Munda Movement. Economic & Political Weekly.

4. Sen, S. (1999). Indigenous Movements and British Administration.
5. Roy, T. (2007). Colonial Rule and Tribal Uprisings.
6. Gupta, P. (2012). Forest Policies in British India.
7. Singh, K. S. (1985). The Tribal Movements of India.
8. Murmu, S. (2003). Sido-Kanhu and the Santhal Struggle.
9. Sharma, J. (2011). Adivasi Resistance.
10. Ekka, A. (2014). Chotanagpur Tenancy and Tribal Rights.
11. Deo, S. (2020). The Bastar Rebellion.
12. Verma, R. (2018). Bhil Freedom Fighters.
13. Mishra, P. (2016). Tribal Voices in Freedom Movement.
14. Ramachandra Guha (2013). Unquiet Woods.
15. Bhangya Bhukya (2021). Subaltern Resistance.
16. Gazetteer of India (Colonial Records).
17. National Archives of India (Reports 1880–1930).
18. Prasad, B. (2001). People's Resistance in Central India.
19. Ekka, N. (2019). Tribal Oral Traditions.
20. Mathur, A. (2010). Revolts under British Raj.
21. Pathak, M. (2017). History of Bastar.
22. Munshi, I. (2004). Adivasi Movements in India.
23. Chaudhuri, S. (2022). Indigenous Identity.
24. Das, P. (2020). Tribal Heroes of India.
25. Ministry of Tribal Affairs Reports (Govt. of India).

•